



मार्च: 2026

वर्ष : 9 अंक : 6

# सिफरी मासिक समाचार



# नील क्रांति की ओर अग्रसर



## निदेशक की कलम से



साथियों,

सर्वप्रथम आप सभी को रंगों के पावन उत्सव होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हमारा यह प्रतिष्ठित संस्थान देश के अन्तर्स्थलीय खुला जल संसाधनों—नदियाँ, जलाशय, बाढ़कृत आर्द्रभूमि, मुहाना, लैगून तथा बैकवाटर—जैसी अमूल्य राष्ट्रीय संपदाओं के संरक्षण, प्रबंधन और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ये संसाधन न केवल देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि लगभग 12.4 लाख अन्तर्स्थलीय मत्स्यजीवियों की आजीविका का सशक्त आधार भी हैं।

हालाँकि, बदलते समय में प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव—जैसे मछलियों का अति-दोहन, जल-प्रवाह में परिवर्तन, आवासीय क्षरण, प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन—इन संसाधनों के अस्तित्व और सतत विकास के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान केवल विज्ञान-आधारित अनुसंधान, नीति-संगत पहल और संस्थागत समन्वय के माध्यम से ही संभव है।

इसी संदर्भ में, सिफरी, कोलकाता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। नवाचार, जलवायु अनुकूलनशीलता और व्यावसायीकरण के समन्वय के माध्यम से सतत मत्स्य विकास को सुदृढ़ करना, ग्रामीण आजीविका को सशक्त बनाना तथा भारत की ब्लू इकोनॉमी को गति देना हमारी प्राथमिक प्रतिबद्धता है। हमारा दृष्टिकोण राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं और 'विकसित भारत @2047' की परिकल्पना के अनुरूप है, जिसमें पारिस्थितिक संतुलन, आर्थिक प्रगति और सामाजिक समावेशन को एकीकृत रूप से आगे बढ़ाना हमारा लक्ष्य है।

आज आवश्यकता है कि अनुसंधान संस्थानों, राज्य सरकारों और किसानों के बीच सहयोग और संवाद को और अधिक सशक्त बनाया जाए, ताकि नई तकनीकों और नवाचारों का लाभ सीधे मत्स्यजीवियों और किसानों तक पहुँच सके। इससे न केवल आजीविका संवर्धन को गति मिलेगी, बल्कि ग्रामीण विकास को भी उद्यमिता और नवाचार का नया आयाम प्राप्त होगा।

यदि हम इस संस्थान को एक परिवार मानकर वैज्ञानिक दृष्टि, समर्पण और सामूहिक सहयोग के साथ कार्य करें, तो निश्चय ही हमारी सृजनशीलता और प्रतिबद्धता देश के मत्स्य क्षेत्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

इसी आशा और विश्वास के साथ, मैं कामना करता हूँ कि होली का यह पावन पर्व आप सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता के नए रंग भर दे।

धन्यवाद।

(निदेशक)

## संस्थान के गुवाहाटी केन्द्र द्वारा 'अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन एवं जलीय कृषि' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित



सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा बोडोलैंड टैरिटोरियल काउंसिल (BTC) और कामरूप मेट्रो, असम के जनजातीय मत्स्य किसानों के लिए 'अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन एवं जलीय कृषि' विषय पर 28-30 जनवरी 2026 के दौरान तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में बोडो और करबी समुदाय के कुल 32 मत्स्य किसानों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में डॉ. एस. के. माझी, केन्द्र प्रमुख, सिफरी गुवाहाटी केंद्र ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें विशेषज्ञों के साथ संवाद करने तथा अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि डॉ. पी. के. हजारिका, ओएसडी, करबी वेलफेयर ऑटोनॉमस काउंसिल (केडब्ल्यूएसी), असम ने मत्स्य किसानों से प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठाने का आह्वान किया।

प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिक मत्स्य पालन से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों जैसे मिश्रित मछली पालन, एकीकृत मत्स्य पालन, मछली रोग प्रबंधन, पर्यावरण निगरानी, मछली बीज उत्पादन एवं पालन, पोषण एवं आहार प्रबंधन तथा तालाब प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। समापन सत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सिमांकु बोर ने प्रशिक्षण का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और राज्य में मत्स्य क्षेत्र की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति संतोष व्यक्त किया।



निदेशक, मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के द्वारा मैथन जलाशय स्थित सिफरी के केज में मत्स्य पालन सुविधा का भ्रमण



त्रिपुरा सरकार के मत्स्य विभाग के निदेशक श्री संतोष दास, आईएस ने अपने तीन अधिकारियों—श्री बप्पी बसफोर, श्री अघोर देबबर्मा और श्री मदन त्रिपुरा—के साथ 30 जनवरी 2026 को झारखंड के मैथन जलाशय स्थित सिफरी के आउटडोर केज कल्चर अनुसंधान केंद्र का भ्रमण किया। यह अध्ययन भ्रमण त्रिपुरा मत्स्य विभाग द्वारा आयोजित किया गया था।

भ्रमण का उद्देश्य सिफरी द्वारा विकसित केज में मछली पालन तकनीक और उसके वैज्ञानिक प्रबंधन से संबंधित जानकारी प्राप्त करना था। इस दौरान अधिकारियों को केज प्रबंधन की दैनिक तकनीकी प्रक्रियाओं तथा वैज्ञानिक कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई।

यह भ्रमण संस्थान के निदेशक तथा ओपन वाटर एक्वाकल्चर मैनेजमेंट एंड प्रोडक्शन (OWAPM) प्रभाग के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समन्वय ओडब्ल्यूएपीएम प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राहुल दास द्वारा किया गया।

इस अध्ययन भ्रमण का उद्देश्य त्रिपुरा राज्य, विशेषकर डम्बूर जलाशय में केज कल्चर तकनीक को व्यावसायिक स्तर पर बढ़ावा देना तथा मछुआरों की आजीविका में सुधार करना है।



## संस्थान द्वारा विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2026 का आयोजन



सिफरी(CIFRI) ने 2 फरवरी 2026 को विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2026 के अवसर पर नदिया जिले के अकाइपुर बील में प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। वर्ष 2026 की थीम “Wetlands and Traditional Knowledge: Celebrating Cultural Heritage” के अंतर्गत इस कार्यक्रम का उद्देश्य आर्द्रभूमि मत्स्यिकी के सतत प्रबंधन तथा आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रति मछुआरों को जागरूक करना था।

यह कार्यक्रम अकाइपुर द्वारबाशिनी फिशरमेन को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें 80 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. रंजन कुमार मन्ना ने आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व, जैव विविधता संरक्षण

तथा नदी संपर्क, जलीय वनस्पतियों आदि की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. असीत कुमार बेरा ने आर्द्रभूमि में मछली रोग और उससे होने वाली मृत्यु की समस्या तथा उसके निवारण के उपायों पर चर्चा की।

कार्यक्रम में वैज्ञानिक-मछुआरा संवाद सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें आर्द्रभूमि के पारिस्थितिक परिवर्तन, प्रदूषण और मत्स्य प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों को सतत मत्स्य उत्पादन और आर्द्रभूमि संरक्षण के लिए उपलब्ध तकनीकों के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



## संस्थान के गुवाहाटी केन्द्र में 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं जलीय कृषि प्रबंधन द्वारा आजीविका सृजन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित



सिफरी(CIFRI) के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में बोडोलैंड टेरिटोरियल काउंसिल (BTC), असम के जनजातीय मत्स्य किसानों के लिए 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं जलीय कृषि प्रबंधन द्वारा आजीविका सृजन' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में बोडो और करबी समुदाय के कुल 50 मत्स्य किसानों (जिनमें 8 महिलाएँ शामिल थीं) ने भाग लिया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में असम सरकार के पूर्व प्रधान सचिव (आईएएस) श्री हेमंत नारजारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने मत्स्य किसानों को उत्पादन बढ़ाने, रोजगार सृजन और ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए वैज्ञानिक मत्स्य पालन अपनाने पर जोर दिया।

प्रशिक्षण के दौरान मिश्रित एवं एकीकृत मछली पालन, फार्म प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, पर्यावरण निगरानी, मछली बीज उत्पादन, पोषण एवं आहार प्रबंधन, सजावटी मत्स्यिकी तथा हैचरी तकनीकों जैसे विषयों पर जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के साथ संवाद सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें उनके क्षेत्र में मत्स्य पालन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की गई।

समापन सत्र में प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र और प्रशिक्षण पुस्तिकाएँ वितरित की गईं। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति संतोष व्यक्त किया।



## संस्थान द्वारा इम्फाल में 'तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली' पर कार्यशाला आयोजित



सिफरी (CIFRI), बैरकपुर ने मणिपुर सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से 9 फरवरी 2026 को इम्फाल के लम्फेलपाट स्थित मत्स्य निदेशालय के प्रशिक्षण कक्ष में “तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली: हितधारक परामर्श एवं प्रदर्शन” विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य मछली परिवहन को सुरक्षित और आसान बनाने के लिए संस्थान द्वारा विकसित पर्यावरण अनुकूल तकनीकों के बारे में हितधारकों को जागरूक करना था। इस अवसर पर मछलियों के प्रबंधन और परिवहन के लिए विकसित हर्बल सिडेटिव एवं एनेस्थेटिक उत्पाद ‘CIFRI फिश तनावहारी’ का प्रदर्शन भी किया गया, जो मछलियों के स्वास्थ्य पर किसी दुष्प्रभाव के बिना उन्हें शीघ्र सामान्य अवस्था में लाने में सहायक है।

कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, मणिपुर मत्स्य विभाग के अधिकारियों, हैचरी मालिकों, जीवित मछली विक्रेताओं तथा बीज परिवहनकर्ताओं सहित कुल 102 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक ने किया। तकनीकी सत्र में उन्होंने संस्थान की विभिन्न नवाचार तकनीकों तथा विशेष रूप से ‘CIFRI फिश तनावहारी’ के उपयोग और महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला के दौरान उत्पाद का लाइव प्रदर्शन भी किया गया और प्रतिभागियों के साथ संवाद सत्र आयोजित किया गया।

इस अवसर पर हितधारकों और सरकारी अधिकारियों के बीच ‘CIFRI फिश तनावहारी’ की 102 बोटलों (प्रत्येक 100 मि.ली.) का

वितरण भी किया गया। प्रतिभागियों ने इस नवाचार की सराहना करते हुए कहा कि यह जीवित मछलियों के परिवहन के दौरान होने वाली मृत्यु दर को कम करने में सहायक सिद्ध होगा। कार्यशाला का समन्वय डॉ. टी. एन. चानू (वैज्ञानिक, सिफरी) और श्री एन. हेमचंद्र (मत्स्य अधिकारी, मणिपुर सरकार) द्वारा किया गया।



## आईसीएआर-सीआईएफआरआई में 'राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा फेज-II' प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित



सिफरी, बैरकपुर में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा फेज-II के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों की व्यावसायिक दक्षता को सुदृढ़ करना तथा सार्वजनिक सेवा वितरण को बेहतर बनाना था। इस कार्यक्रम में कुल 43 कर्मचारियों ने भाग लिया, जिनमें 21 वैज्ञानिक, 11 तकनीकी अधिकारी, 7 प्रशासनिक अधिकारी तथा 4 कुशल सहायक कर्मचारी शामिल थे।

प्रशिक्षण का संचालन दो मास्टर ट्रेनर—श्री पलाश तिवारी, वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा०कृ०अनु०परि०-निनफेट, कोलकाता तथा श्री प्रतीक गौर, वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा०कृ०अनु०परि०-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली—द्वारा किया गया। उन्होंने राष्ट्रीय कर्मयोगी ढांचे तथा प्रभावी प्रशासन में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दौरान सेवा-उन्मुख दृष्टिकोण, नैतिक आचरण, उत्तरदायित्व तथा प्रशासनिक कार्यों में दक्षता जैसे विषयों पर संवादात्मक सत्र आयोजित किए गए। प्रशिक्षण के समापन पर आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक ने प्रतिभागियों को अपने कार्यों में सीखी गई बातों को लागू करने और नागरिक-केंद्रित प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रेरित किया।



**‘भारी धातु एवं माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण में उन्नत तकनीक (ICP-MS एवं  $\mu$ FTIR)’ पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित**



सिफरी, बैरकपुर में 02-06 फरवरी 2026 के दौरान “भारी धातु एवं माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण में उन्नत तकनीक (ICP-MS एवं  $\mu$ FTIR)” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य जलीय पर्यावरण, मछली तथा अन्य जैविक नमूनों में भारी धातुओं और माइक्रोप्लास्टिक जैसे उभरते प्रदूषकों के विश्लेषण की उन्नत तकनीकों की जानकारी प्रदान करना था।

प्रशिक्षण में देश के विभिन्न संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों से जलीय पर्यावरण प्रबंधन, मत्स्य संसाधन प्रबंधन तथा प्राणीविज्ञान जैसे विषयों से जुड़े 19 छात्र एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को इंडक्टिवली कपलड प्लाज़्मा मास स्पेक्ट्रोमेट्री (ICP-MS) और माइक्रो-फूरियर ट्रांसफॉर्म

इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी ( $\mu$ FTIR) के सिद्धांत, उपकरणों की संरचना तथा उनके उपयोग के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही गंगा नदी से नमूना संग्रह, नमूनों की प्रोसेसिंग और विश्लेषण की व्यावहारिक जानकारी भी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के निदेशक ने जल निकायों में प्रदूषण की नियमित निगरानी और रिपोर्टिंग के महत्व पर बल देते हुए कहा कि यह ‘वन हेल्थ और वन प्लैनेट’ की अवधारणा को साकार करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।



## सिफरी के क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज में 'मीठे पानी की मछलियों की टैक्सोनोमी' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन



सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज द्वारा 09-11 फरवरी 2026 के दौरान “मीठे पानी की मछलियों की टैक्सोनोमी (Freshwater Fish Taxonomy)” विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए कुल 26 प्रतिभागियों, जिनमें छात्र और संकाय सदस्य शामिल थे, ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान स्थिति, मछली टैक्सोनोमी का परिचय, मछली प्रजातियों की पहचान के लिए मॉर्फोमेट्रिक एवं मेरिस्टिक तकनीकों तथा विभिन्न ऑर्डर की मीठे पानी की मछलियों की पहचान से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

समापन सत्र 11 फरवरी 2026 को आयोजित किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार, के मत्स्य विभाग के उपनिदेशक श्री विजय पाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाणपत्र वितरित किए तथा उत्तर प्रदेश में मात्स्यिकी के महत्व पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के दौरान “मीठे पानी की मछलियों की टैक्सोनोमी” विषय पर एक प्रशिक्षण पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।



कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ए. आलम (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. वी. आर. ठाकुर (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा श्री जीतेंद्र कुमार द्वारा, संस्थान के निदेशक और क्षेत्रीय केंद्र प्रमुख प्रयागराज के डॉ. बी. आर. चव्हाण के मार्गदर्शन में किया गया।

## असम के जनजातीय मत्स्य किसानों के लिए 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं जलीय कृषि के सिद्धांत एवं व्यवहार' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा असम के उदालगुड़ी और बक्सा जिलों के जनजातीय मत्स्य किसानों के लिए 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं जलीय कृषि के सिद्धांत एवं व्यवहार' विषय पर 11-13 फरवरी 2026 के दौरान तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 30 मत्स्य किसानों (जिसमें 2 महिलाएँ शामिल थीं) ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिक मत्स्य पालन की विभिन्न तकनीकों जैसे मिश्रित मछली पालन, एकीकृत मत्स्य पालन, मछली रोग प्रबंधन, पर्यावरण निगरानी, मछली बीज उत्पादन एवं पालन, पोषण एवं आहार प्रबंधन तथा तालाबों में पूर्व एवं पश्चात स्टॉकिंग प्रबंधन पर जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण के अंतर्गत 12 फरवरी 2026 को कामरूप (रूरल), असम स्थित एम/एस नितुल फिश फार्म, हाजो का शैक्षणिक भ्रमण भी कराया गया, जिससे प्रतिभागियों को तालाब तैयारी और फार्म प्रबंधन का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

समापन सत्र 13 फरवरी 2026 को आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. पी. के. हजारिका, ओएसडी, करबी वेलफेयर ऑटोनॉमस काउंसिल (केडब्ल्यूएसी), असम ने मत्स्य किसानों से प्रशिक्षण के ज्ञान और कौशल का लाभ उठाने का आग्रह किया। प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम पर संतोष व्यक्त किया।



## भारत-विस्तार के राष्ट्रीय शुभारंभ का लाइव प्रसारण देखा गया

सिफरी बैरकपुर में 17 फरवरी 2026 को भारत-विस्तार (Bharat-VISTAAR) (फेज-1) के राष्ट्रीय शुभारंभ का लाइव प्रसारण आयोजित किया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। यह राष्ट्रीय कार्यक्रम जयपुर में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के अंतर्गत संपन्न हुआ।



इस अवसर पर माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने, राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा की उपस्थिति में, भारत-विस्तार का शुभारंभ किया। देशभर के लाखों किसान आईसीएआर संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों तथा राज्य कृषि विभागों के माध्यम से वर्चुअल रूप से इस कार्यक्रम से जुड़े।

भारत-विस्तार एक एआई-संचालित डिजिटल मंच है, जिसका उद्देश्य किसानों को कृषि सम्बन्धी समस्त जानकारी को एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराना है। इसके माध्यम से मौसम पूर्वानुमान, बाजार भाव,

फसल परामर्श, कीट एवं रोग संक्रमण, मृदा स्वास्थ्य जानकारी, बीमा, ऋण सेवाएँ तथा सरकारी योजनाओं से संबंधित सेवाओं पर सूचनाएं एक स्थान पर उपलब्ध होंगी। किसान इस प्रणाली का उपयोग वॉइस कॉल, चैटबॉट और आगामी मोबाइल ऐप के माध्यम से अपनी भाषा में कर सकेंगे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. एम. एल. जाट, सचिव (DARE) एवं महानिदेशक (ICAR) ने बताया कि एआई एक समेकित मंच के रूप में कार्य करता है, जो विभिन्न कृषि विभागों और सेवाओं को एक साथ जोड़कर किसानों तक कृषि सहायता को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाता है।



## सिफरी ने असम के नगांव जिले के मेर बील और सिबास्थान-पुताकोलोंग बील में सिस्टोमस सराना (ऑलिव बाबी) के एचडीपीई पेन कल्चर का सफल फ्रंट-लाइन प्रदर्शन किया।

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) द्वारा वित्तपोषित परियोजना “आर्द्रभूमि मत्स्यिकी के सतत संवर्धन और संरक्षण के लिए स्व-प्रजननशील देशी प्रजातियों का उपयोग” के अंतर्गत की गई।



मेर बील में 17 फरवरी 2026 तथा सिबास्थान-पुताकोलोंग बील में 18 फरवरी 2026 को “पेन क्षेत्र में पालित मछलियों का मत्स्यत्र” विषय पर फील्ड डे का आयोजन किया गया। अक्टूबर 2025 में 10-15 ग्राम वजन के सिस्टोमस सराना के फिंगरलिंक्स को दो एचडीपीई पेन (प्रत्येक 0.1 हेक्टेयर) में लगभग 200 किलोग्राम बीज को संचयित किया गया। पालन अवधि के दौरान मछलियों को 28% कच्चे प्रोटीन युक्त पेलेट आहार दिन में दो बार शरीर भार के 2-3% की दर से दिया गया।

लगभग पाँच महीनों के पालन के बाद फरवरी 2026 में मछलियों को पकड़ा गया, जिसमें

अतिजीवित दर 70-80% से अधिक दर्ज की गई और मछलियों का अधिकतम वजन लगभग 60 से 277 ग्राम तक पाया गया। मत्स्यत्र के बाद मछलियों की वृद्धि और स्टॉक संवर्धन के लिए पुनः बील में छोड़ दिया गया। स्थानीय पट्टाधारियों ने इस पहल के लिए सिफरी और एनएफडीबी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पेन कल्चर तकनीक से प्राप्त लाभ और अनुभव पर संतोष व्यक्त किया।



## संस्थान में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित



सिफरी, बैरकपुर में 17 से 23 फरवरी 2026 तक अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बिहार के भागलपुर जिले के 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक मत्स्य पालन पद्धतियों को सुदृढ़ करना तथा आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देना था।

प्रशिक्षण के दौरान तालाब प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे स्थल चयन, तालाब की तैयारी, चूना एवं उर्वरक का उपयोग, तटबंध रखरखाव तथा जल गुणवत्ता प्रबंधन (pH, घुलित ऑक्सीजन, तापमान और अमोनिया नियंत्रण) पर विस्तार से जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को नर्सरी और रियरिंग तालाब प्रबंधन, स्टॉकिंग घनत्व, आहार प्रबंधन तथा अतिजीविता की दर बढ़ाने के उपायों के बारे में भी व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम में मिश्रित मछली पालन (कॉम्पोजिट फिश कल्चर) को समझाया गया तथा रोहू, कतला, मृगल, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प जैसी उपयुक्त प्रजातियों पर चर्चा की गई। साथ ही बायोफ्लॉक और आरएएस जैसी आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों तथा जलवायु परिवर्तन के अनुकूल और कम लागत वाले मत्स्य पालन उपायों पर भी जानकारी दी गई।

व्यावहारिक अनुभव के लिए प्रतिभागियों को एक मछली फार्म, एक सजावटी मछली बाजार तथा ईस्ट कोलकाता वेटलैंड का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम का समन्वयन संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. अंजना एक्का और डॉ. मितेश रामटेके ने किया। यह प्रशिक्षण प्रतिभागियों की तकनीकी दक्षता बढ़ाने तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास को प्रोत्साहित करने में उपयोगी सिद्ध हुआ।

प्रो. उद्दीन ने सिफरी के प्रयासों की सराहना की और क्षेत्र में सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन को आगे बढ़ाने हेतु सहयोगात्मक पहलों पर विश्वास व्यक्त किया।

## असम के आर्द्रभूमियों को बड़ा प्रोत्साहन: सतत मत्स्य प्रबंधन हेतु सिफरी ने 24-महीने के समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए



सिफरी, बैरकपुर और एशियाई विकास बैंक (ADB) द्वारा वित्तपोषित असम सतत आर्द्रभूमि एवं एकीकृत मत्स्य रूपांतरण परियोजना (SWIFT) के अंतर्गत 26 फरवरी 2026 को एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के तहत सिफरी ने असम में बील मत्स्यिकी के सतत विकास और प्रबंधन के लिए तकनीकी सेवाएँ प्रदान करेगा। यह परियोजना 24 महीनों की अवधि की है तथा इसका कुल बजट 2.88 करोड़ रुपये है।

समझौता ज्ञापन पर संस्थान के निदेशक, राज्य परियोजना निदेशक, एआरआईएस सोसाइटी असम श्री वीरेन्द्र मित्तल (आईएस) तथा निदेशक मत्स्य, असम श्री गौरी शंकर दास (एसीएस) ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर एडीबी की परियोजना टीम लीडर सुने किम सहित विभिन्न संस्थानों के अधिकारी भी उपस्थित रहे।



परियोजना के अंतर्गत मत्स्य विभाग और सामुदायिक बील विकास समितियों की क्षमता को सुदृढ़ करने, बीलों के जल गुणवत्ता की निगरानी, मत्स्य उत्पादन बढ़ाने की रणनीतियाँ विकसित करने तथा छोटी स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण और जैव विविधता की निगरानी पर कार्य किया जाएगा। इस पहल के तहत असम के 100 बीलों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाएगा, जिससे सतत मत्स्य उत्पादन और आर्द्रभूमि प्रबंधन को बढ़ावा मिलेगा।

## राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विद्यालयों को सजावटी एक्वेरियम सेट एवं सजावटी मछलियों का वितरण



सिफरी द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी के सहयोग से 28 फरवरी 2026 को कुलतली में विद्यालयों को सजावटी एक्वेरियम सेट एवं सजावटी मछलियों का वितरण किया गया। यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों से आए उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस पहल के अंतर्गत जलीय जीवन के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से विद्यालयों को 50 सजावटी एक्वेरियम सेट तथा सजावटी मछलियाँ वितरित की गईं।

कार्यक्रम में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से कुल 50 प्रतिनिधि तथा विभिन्न विद्यालयों के 149 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व, कृषि विज्ञान के महत्व के साथ अंतर्स्थलीय मत्स्य विज्ञान के महत्व, सजावटी मछली पालन तथा मत्स्य विज्ञान में करियर की संभावनाओं के बारे में संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से बताया गया। यह भी बताया गया कि सजावटी मछली पालन न केवल मानसिक शांति और सौंदर्यात्मक आनंद प्रदान करता है, बल्कि जलीय जीव विज्ञान और पारिस्थितिकी को समझने के लिए एक शैक्षणिक माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, यह एक समृद्ध वैश्विक उद्योग का समर्थन करता है जो आजीविका प्रदान करता है, कृत्रिम प्रजनन के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण को प्रोत्साहित करता है तथा सांस्कृतिक महत्व भी रखता है, जहाँ कोई और गोल्डफिश जैसी प्रजातियाँ समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती हैं। भारत के भविष्य की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मत्स्य विज्ञान के महत्व पर भी चर्चा की गई।



सत्र को अधिक सहभागितापूर्ण बनाने के लिए सजावटी एक्वेरियम सेट के संयोजन (असेंबली) का प्रदर्शन भी किया गया, जिससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम का सफल समन्वय डॉ. प्रणय परिडा, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. एम. शाय्या देवी, वैज्ञानिक; श्री मानवेन्द्र राँय, तकनीकी अधिकारी; तथा श्री कौशिक मंडल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

## पंबा नदी में 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं सतत आजीविका' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन



सिफरी के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन द्वारा 18.02.2026 को 'अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी एवं सतत आजीविका' विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संस्थान की चालित परियोजना 'पंबा नदी के मछली उत्पादन, विविधता तथा मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आकलन, मत्स्यिकी एवं आजीविका की स्थिरता की दिशा में' के अंतर्गत आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंतर्स्थलीय मछुआरों को जिम्मेदार मत्स्यन (फिशिंग) पद्धतियों, देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण तथा आजीविका सुरक्षा को सुदृढ़ करने की योजनाओं के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम में पंबा अंतर्स्थलीय मत्स्यजीवी सहकारी समिति के लगभग 17 मछुआरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए।

मत्स्य भवन, तिरुवल्ला की मत्स्य विस्तार अधिकारी श्रीमती शिल्पा प्रदीप ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा प्रतिभागियों को संबोधित किया। संवाद सत्र के दौरान मछुआरों ने क्षेत्र स्तर की कई चुनौतियों को उजागर किया, जिनमें मछली उत्पादन में गिरावट, ऊदबिलाव (ओटर) द्वारा मछली पकड़ने और होने वाली क्षति, संसाधनों की स्थिरता को प्रभावित करने वाली अवैध मत्स्यन गतिविधियाँ, लाभ में कमी तथा संचालन लागत में वृद्धि शामिल हैं। कार्यक्रम के माध्यम से संसाधनों के सतत उपयोग के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर बल दिया गया। सहभागी मछुआरों ने जिम्मेदार मत्स्यन उपायों को अपनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

### प्रकाशनमंडल

प्रकाशक: प्रदीप डे, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फ़ैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: [director.cifri@icar.org.in](mailto:director.cifri@icar.org.in); वेबसाइट: [www.cifri.res.in](http://www.cifri.res.in)